नयनों का रिश्ता

लिफाफे पर तो मेरा ही एड्रेस था पर पीछे ? जैसे दिल को हजारों वाट का करन्ट लगा था। मैंने कुर्सी की पुश्त पर पीठ टिका दी थी। कुछ देर तक तो लगा कि नीलम, वह परायी नीलम लिफाफे पर हलचल कर रही है...। वह अटैची में कपड़े रखने के लिए गलीचे पर बैठी थी। अटैची उससे, बंद नहीं हो पा रही थी। जिसे वह जबरदस्ती बंद कर रही थी। मैं भी उसे कुछ कह नहीं पा रहा था। लेकिन हिम्मत करके आखिर बोला, ''बंद नहीं हो रही है तो जबरदस्ती क्यों कर रही हो ? एक-दो कपड़े निकाल दो न!''

नीलम का एक हाथ अटैची पर और दूसरा हाथ जमीन पर पर था। अपनी बड़ी-बड़ी आंखों से मेरी तरफ देखते हुए वह कुछ क्षणों के लिए फ्रीजिंग पोज में आ गई थी।

यही क्षण थे जब मैं उसे कुछ कह सकता था लेकिन उसकी आंखों में इतने सवाल नजर आ रहे थे कि मैं जो कुछ भी उससे कहना चाह रहा था, वह भूल गया।

वह उछल कर अटैची पर जा बैठी और अटैची बंद हो गई। फिर उसने उठकर नैपकीन से मुंह पोंछा। वैसे तो मुझे उसके चेहरे पर पसीने की एक भी बूंद नजर नहीं आ रही थी फिर भी उसने मुंह पोंछा। मुझे याद आ रहा था, उसका गुलाबों की सुंदरता लिए हुए चेहरा, चूमने की ख्वाहिश पैदा करती ताजगी। मैंने नीची निगाहों से गलीचे के फूलों को देखना पसंद किया और वह अटैची उठाकर बाहर चली गई।

''टैक्सी-टैक्सी।'' बाहर से आवाज सुनाई दी तो अचानक ही मेरे शरीर में फुर्ती सी आ गई और मैंने बाहर निकल कर पुकारा, ''नीलू !'' और फिर मेरे आगे एक सफेद बुत आकर खड़ा हो गया था, बाबा का मिलेट्री प्रशिक्षित कद्दावर शरीर। निगाहों का दायरा छोटा हो गया था।

''इस घर में, इस औरत के लिए कोई जगह नहीं है।'' बाबा ने आदेश दिया और मैं नि:शब्द घर के अंदर चला गया था।

आज उसी नीलू का खत आया है। यह घर जिसमें नौकर चाकर, ढेरों मेहमान, कुत्ते-बिल्ली, बुलबुल-तोते, पता नहीं कितने जीव पलते रहे हैं, उसमें नीलम के लिए कोई जगह नहीं थी।

वह खत नहीं था, छ: पन्नों की दास्तान थी।

मेरे बच्चों के डैडी,

तलाकनामा मिलने के बाद मुझे खत लिखने का न तो कोई अधिकार है और न ही रुचि, फिर भी खत लिख रही हूं। पता नहीं किस प्रेरणा के वशीभूत। शायद अपनी नौकरी के दौरान (मुझे सोशल वर्कर के तौर पर ब्यूटी प्रोपेलर मिल में नौकरी मिल गई है यह तो आपको पता चल चुका होगा) जो अनुभव मुझे मिले हैं उनसे मेरे इस जीवन की टूटन के कई कारणों का पता चल पाया है। वही आपको बताना चाहती हूं।

कितनी अजीब बात है। इस नौकरी में मुझे मजदूरों के झगड़ों को सुलझाना, उन्हें अच्छी आदतें सिखाना, और उनके टूटे रिश्तों को जोड़ने की कोशिश करना है। है न, एक अंधी द्वारा अंधों को रास्ता दिखाने जैसा काम।

लेकिन अंधों को रास्ता दिखाते हुए रोशनी मानो मेरी आंखों में उतर आई है। आपके घर और मेरे मायके वाले घर में बहुत अंतर है। धन, दौलत, सुंदरता और सामाजिक स्तर में आपका घर इतना तरक्की पसंद था कि वैसा बनने के लिए मुझे पूरे एक जन्म की जरूरत थी। वैसे तो कला-कौशल के मामले में मेरा मायका भी कम नहीं था। मैंने जिस वक्त नृत्य कला में नाम कमाया था, उस वक्त मेरी छोटी बहिन ने चित्रकारी में कई इनाम प्राप्त किये थे। बड़ी बहिन एक अच्छी स्टेज कलाकार बन चुकी थी और सबसे बड़ी बात यह थी कि माता-पिता, छोटे भाई-बहिन सब लोग आपस में इतने प्रेम प्यार से रहते थे कि झगड़ा शब्द हमारे कुटुम्ब की डिक्शनरी में ही नहीं था। हमारे पिता एक नरम-दिल इन्सान थे जिनके होंठों पर हमेशा भिटाई घोट की ये पक्तियां रहती थीं सिंधी के सोलहवीं शताब्दी के प्रसिद्ध शायर शाह अब्दुल लतीफ की पंक्तियां 'नमीं खमीं निहारि तूं डमरुवड़ो दुखु अर्थात् गुस्सा बड़ा दुखदायी होता है इसलिये झुककर विनम्रता से व्यवहार कर।

उसके विपरीत आपके पिता जो मिलिट्री से रिटायर्ड थे, उन्हें हर बात में अपना आदेश मनवाना अच्छा लगता था। वे यह भूल गये थे कि घर कोई मिलिट्री का मोर्चा नहीं होता, युद्ध के लिए तैयार होने वाला सेना का कोई लश्कर नहीं होता। घर तो शान्ति और सृजन का एक घोंसला होता है, जहां संकरे पुल पर चलने के लिए बकरियों के समान एक को नीचे बैठकर दूसरे को अपने ऊपर से निकलने का मौका देना पड़ता है। आपकी मां हमेशा उनसे डरती रहतीं थीं। पति-पत्नी के बीच का प्रेम, स्त्री-पुरुष का दोस्ताना रिश्ता क्या होता है ? यह उनकी समझ से दूर की बात थी। उन्होंने अपना पूरा नारी प्रेम समेट कर मातृ प्रेम के रूप में आप दोनों बच्चों पर उंड़ेल दिया था। मैंने तो प्रेम और दोस्ती की विचारधारा के साथ इस घर में प्रवेश किया था जिसे वह समझ ही नहीं पाये। आपने भी शादी के बाद कुछ दिनों तक तो उसे समझा और फिर हर वक्त आपकी

आंखों में भी एक डर नजर आने लगा। आप हर बात पर कहने लगे, ''इतने बड़े घर की बहू के लिए स्टेज पर नाचना या ऐरे गैरे व्यक्ति के घर पर मिलने जाना ठीक नहीं... ।''

अक्सर शाम को दोस्त आपके पास महफिल लगाते थे। कभी-कभी उनके साथ उनकी पत्नियां और बहिनें भी आतीं थीं और आपके गीतों-गजलों पर दाद दी जाती थी। तब मेरी आंखें आंसुओं से भर जातीं थीं। मैं अपने कमरे की ओर चली जाती तो पीछे से सुनाई देता कि इसे गाने में मजा नहीं आता है और मैं अपने कमरे में जाकर तकिये में मुंह छिपाकर खूब रोती थी। आप मेरे पति होने की हैसियत से रात 12 बजे मेरे पलंग के पास आकर पूछते थे, ''क्या हुआ था आपको ? मेरे गाने पर मिली वाह-वाह आपको रास नहीं... ?''

उफ, मेरे जख्मों पर यह नमक। मेरा टूटा हुआ मन वाह-वाह के नशे में डूबे हुए पति को क्या कहता ? मैं तो यह सोचकर महफिल से उठकर आ जाती थी कि मुझे भी तो अपनी कला पेश करने का, वाह-वाह की गूंज सुनने का सुख मिल सकता है। मेरा नौजवान पति, अपनी तारीफ का स्वाद चखने के बाद भी मेरे मन को क्यों नहीं समझता। मुझे हर वक्त स्टेज पर जाने से क्यों रोकता रहता है ?

एक बार साहस करके मैंने अपने मन की उलझन को आपके सामने भी रखा था लेकिन आपकी नजर मुझे जवाब देते समय बार-बार बाबा के कमरे की तरफ उठ जाती थी। आपने जो जवाब दिया था वह मुझे आज भी याद है। आपने कहा था, ''इस देश में औरत और मर्द की अपनी-अपनी हैसियत है। तुम कलाकार हो, बेशक रहो। आईने के आगे नाच-कूद कर अपना मन बहला लो लेकिन तुम्हारा स्कूल के बच्चों को नृत्य सिखाना या खुद स्टेज पर जाकर नृत्य करना बाबा को बिल्कुल पसंद नहीं... ।''

बाबा तो बाबा थे लेकिन आप...उस समय स्त्री पुरुष के समान अधिकार का आदर न करके आपने कहा था, ''तुम हद से ज्यादा बोल रही हो। बाबा का आदेश न मानना यानी घर से बाहर निकलना, समझी ?''

उस रात मैं दरिया जितना रोते-रोते बेसुध हो गई थी। सुबह जब मैं नींद से जाग नहीं पाई तोआपने डॉ. को बुलाया था जिनकी दवा से मैं होश में आई थी। कुछ दिनों के बाद डॉ. ने कहा था, ''इतने सुंदर और आलीशान घर के अंदर कोई दुख से बेहोश भी हो जाता है, यह बात समझ में नहीं आती ?''

मेरा मन जो गले तक भरा हुआ था, छलक पड़ा। मन को चीरती हुई पीड़ा बह निकली। और डॉक्टर बन गया मेरा हमदम,मेरा हमदर्द। उसी के कहने पर मुझे फिर से बच्चों को नृत्य सिखाने और कभी-कभी दूर-दराज के इलाके में अपना नृत्य दिखाने की इजाजत मिल जाती थी। मेरे नन्हें फूल, रोशन और मीना इस दुनिया में आए तो आपकी

मां भी मेरे करीब आई लेकिन अपने मातृ प्रेम के सूखे हुए पौधे को फिर से ताजा करने के लिए, बस। वह अपने साथ दोनों बच्चों को ले गई। मैं मानती हूं कि बच्चों से कोमल व्यवहार करने का मुझमें अभी इतना माद्दा नहीं आया था लेकिन फिर भी बच्चों के बिना मेरा जीवन सूखे पेड़ जैसा हो गया था। इतने बड़े घर में जहां पानी का गिलास भी नौकर भर कर देते हैं, वहां मां को बच्चों की कौनसी देखभाल करनी पड़ती? और फिर मेरे प्यार से तरसते मन में, मातृ प्रेम से हटाये हुये मन में डॉक्टर की हमदर्दी से एक नरम नाजुक अंकुर पैदा हो गया। मैं डर गई थी। उस नरम नाजुक अंकुर को कुचल कर मैंने मन से बाहर निकाल फेंका था। एक दिन आपने कहा था, ''यह साला डॉक्टर दिन में एक-दो बार जरूर आता है। बाबा को तो इस बेकार के इन्सान पर बहुत गुस्सा आता है।''

मैं मन ही मन में बोल पड़ी थी, ''पति देव! कभी विचार आया है कि अपनी पत्नी को बांहों में भरकर कहो, रानी तुम्हारे मन में जो भी दुःख है मुझे बताओ।'' लेकिन पुरुष के अहंकार से चूर पत्नी के फर्ज से गाफिल पति को यह सब कौन याद कराता?

मैंने उस वक्त सिर्फ इतना ही कहा था कि यह घर सारा दिन मेहमानखाना बना रहता है, उसमें एक और मेहमान के आने से क्या फर्क पड़ता है?

आपने धमकी देते हुए कहा था, ''मुझे फर्क मत समझाओ, मैं सब जानता हूं।''

और दूसरे दिन स्वयं बाबा ने आकर कहा था, ''इस डॉक्टर का वक्त बेवक्त आना मुझे पसंद नहीं, यदि उसे यहां आने के लिए मना नहीं किया तो याद रखना तुम्हारे लिए भी इस घर में कोई जगह नहीं होगी।''

मुझसे यह बेइज्जती, यह सैन्य आदेश बर्दाश्त न हो सका। मेरे लिए डॉक्टर की इतनी अहमियत नहीं थी कि मैं उसके बिना रह न सकूं लेकिन आपकी विवाहिता और आपके दो बच्चों की मां बनने के बाद भी यदि मैं इस घर में इज्जत से रहने के लायक नहीं थी तो फिर ऐसे घर में रहने से क्या फायदा?

और मैंने आप से बंधा हुआ दामन छुड़ाकर अपने दिल को सख्त बना लिया।

एक बार किसी मध्यस्थ ने मुझे, आपके पास लौट जाने के लिए कहा था। मैंने उसे जवाब दिया था कि यदि पतिदेव खुद आकर ले जाएंगे तो जाऊंगी। आपके यहां से जवाब आया, ''जैसे खुद गई है वैसे ही वापस आए।'' कैसा मजाक था, क्या वास्तव में मैं खुद घर से निकली थी? और मैंने भी सीता मैया की परम्परा को निभाते हुए मर जाना पसंद किया लेकिन आपके पास लौटकर बेइज्जत होने से मना कर दिया।

काश, इस देश में एक नए राम का जन्म होता जो हाथ बढ़ाकर खींच लेता सीता

माता को, दुखों के तन्हा वन से। अपने शक्तिशाली शरीर के अंदर मोम सा मन लिए सीता को उठाकर कहता, "चलो, आओ मेरे जीवन साथी कि तुम्हारे बिना मेरा कोई भी यज्ञ सफल नहीं है, कोई भी परम्परा पूरी नहीं लगती, आओ चलो मेरे साथ।" –नीलू

मैंने खत पढ़ना बंद किया लेकिन खत से निकलकर बढ़ा हुआ हाथ जैसे मेरे आगे घूमने लगा। समझता हूं , तलाक के बाद नीलू से मेरा मिलना और अपने बच्चों की मां को, 'मूमल प्यारी' पुकारते हुए अपने साथ ले आना, मेरे घर के सदस्यों को अच्छा नहीं लगेगा। लेकिन लम्बे समय से अलग रहते हुए अपने लोगों की इतनी बड़ी बस्ती की हमदर्दी और तरस भरी नजरें, पत्नी के प्यार के आगे महत्वहीन सी लगती हैं। अपने परिवार की खींचतान यदि हम नये जमाने के नौजवानों के लिए फांसी का फंदा बन जाए तो मैं उसे तोड़कर बाहर निकल आऊंगा।

अनुवाद : गायत्री

□□□